1857 की क्रांति: भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख कारण, परिणाम व प्रमुख विद्रोही नेता

1857 की क्रांति:

लॉर्ड कैनिंग के गवर्नर-जनरल के रूप में शासन करने के दौरान ही 1857 ई. की महान क्रान्ति हुई। इस क्रान्ति का आरम्भ 10 मई, 1857 ई. को मेरठ से हुआ, जो धीरे-धीरे कानपुर, बरेली, झांसी, दिल्ली, अवध आदि स्थानों पर फैल गया। इस क्रान्ति की शुरुआत तो एक सैन्य विद्रोह के रूप में हुई, परन्तु कालान्तर में उसका स्वरूप बदल कर ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध एक जनव्यापी विद्रोह के रूप में हो गया, जिसे भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कहा गया। 1857 ई. की इस महान क्रान्ति के स्वरूप को लेकर विद्धान एक मत नहीं है। इस बारे में विद्वानों ने अपने अलग-अलग मत प्रतिपादित किये हैं, जो इस प्रकार हैं-'सिपाही विद्रोह', 'स्वतन्त्रता संग्राम', 'सामन्तवादी प्रतिक्रिया', 'जनक्रान्ति', 'राष्ट्रीय विद्रोह', 'मुस्लिम षडयंत्र', 'ईसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्म युद्ध' और 'सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष' आदि।

1857 के विद्रोह के प्रमुख कारण:

- आधुनिक भारतीय इतिहास में 1857 का विद्रोह विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि इसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम का आरंभ माना जाता है।
- 1857 के विद्रोह को जन्म देने वाले कारणों में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक सभी कारण जिम्मेदार हैं।
- ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन जनता में असंतोष का बहुत बड़ा कारण था पेचीदा नयाय प्रणाली तथा प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी न के बराबर होना विद्रोह के प्रमुख कारणों में से एक था।
- राजनीतिक कारणों में डलहौजी की व्यपगत नीति और वेलेजली की सहायक संधि का विद्रोह को जन्म देने में महत्वपूर्ण भूमिका रही।
- विद्रोह के लिए आर्थिक कारण भी जिम्मेदार रहे। ब्रिटिश भू राजस्व नीति के कारण बड़ी संख्या में किसान व जमींदार अपनी भूमि के अधिकार से वंचित हो गए।
- 1856 में धार्मिक निर्योग्यता अधिनियम द्वारा ईसाई धर्म ग्रहण करने वाले लोगों को अपने पैतृक संपत्ति का हकदार माना गया। साथ ही अति उन्हें नौकरियों में पदोन्नति, शिक्षा संस्थानों में प्रवेश की सुविधा प्रदान की गई। धार्मिक कार्यों की पृष्ठभूमि में इसे देखा जा सकता है।

- 1857 के विद्रोह के लिए जिम्मेदार सामाजिक कारणों में अंग्रेजी प्रशासन के सुधारवादी उत्साह के अंतर्गत पारंपरिक भारतीय प्रणाली और संस्कृति संकटग्रस्त स्थिति में पहुंच गई, जिसका रुढ़िवादी भारतीयों ने विरोध किया।
- 1857 के विद्रोह के अनेक सैनिक कारण भी थे, जिंहोने इसकी पृष्ठभूमि का निर्माण किया।
- कैनिंग ने 1857 में सैनिकों के लिए ब्राउन वैस के स्थान पर एनफील्ड रायफलों का प्रयोग शुरु करवाया जिसमें कारतूस को लगाने से पूर्व दांतो से खींचना पडता था, चूंकि कारतूस में गाय और सूअर दोनों की चर्बी लगी थी इसलिए हिंदू और मुसलमान दोनों भड़क उठे।
- 1857 का विद्रोह अचानक नहीँ फूट पड़ा था, यह पूर्वनियोजित विद्रोह था।
- कुछ इतिहासकार मानते हैँ कि नाना साहब ने निकटस्थ अजीमुल्ला खाँ तथा सतारा के अपदस्थ राजा के निकटवर्ती रणोली बापू ने लंदन में विद्रोह की योजना बनाई।
- अजीमुल्ला ने बिठुर में नाना साहब के साथ मिलकर विद्रोह की योजना को अंतिम रुप देते हुए 31 मई, 1857 की क्रांति के सूत्रपात का दिन निश्चित किया था।
- क्रांति के प्रतीक के रुप में कमल का फूल और रोटी को चुना गया। कमल के फूल को उन सभी सैन्य टुकड़ियों तक पहुंचाया गया, जिन्हें विद्रोह में शामिल होना था। रोटी को एक गांव का चौकीदार दूसरे गांव तक पहुंचा था।
- चर्बी लगे कारतूस के प्रयोग को 1857 की विद्रोह का तत्कालिक कारण माना जाता है।
- चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से चारों तरफ से असंतोष ने विद्रोह के लिए निर्धारित तिथि से पूर्व ही विस्फोट को जन्म दे दिया।
- चर्बीयुक्त कारतूस के प्रयोग के विरुद्ध सर्वप्रथम कलकत्ता के समीप बैरकपुर कंपनी में तैनात 19वीं व 34वीं नेटिव इंफेंट्री के सैनिकोँ ने बगावत की।
- 29 मार्च 1857 को मेरठ छावनी में तैनात 34वीं इन्फैन्ट्री के एक सैनिक मंगल पांडे ने चर्बी लगे कारतूसों के प्रयोग से इनकार करते हुए अपने अधिकारी लेफ्टिनेंट बाग और लेफ्टिनेंट जनरल ह्युसन की हत्या कर दी।
- 8 अप्रैल, 1857 को सैनिक अदालत के निर्णय के बाद मंगल पाण्डे को फांसी की सजा दे दी गई।
- 10 मई, 1857 को मेरठ छावनी के सैनिकों ने विद्रोह की शुरुआत कर दिल्ली की और कूच किया।
- 12 मई, 1857 को दिल्ली पर कब्जा करके सैनिकोँ ने निर्वासित मुग़ल सम्राट बहादुर शाह जफर को भारत का बादशाह घोषित कर दिया।

1857 के विद्रोह का प्रसार:

- दिल्ली पर कब्जा करने के बाद शीघ्र ही है विद्रोह मध्य एवं उत्तरी भारत में फैल गया।
- 4 जून को लखनऊ में बेगम हजरत हजामत महल के नेतृत्व में विद्रोह का आरंभ हुआ जिसमें हेनरी लॉटेंस की हत्या कर दी गई।
- 5 जून को नाना साहब के नेतृत्व में कानपुर पर अधिकार कर लिया गया नाना साहब को पेशवा घोषित किया गया।
- झांसी में विद्रोह का नेतृत्व रानी लक्ष्मी बाई ने किया।
- झांसी के पतन के बाद लक्ष्मी बाई ने ग्वालियर में तात्या टोपे के साथ मिलकर विद्रोह का नेतृत्व किया। अंततः लक्ष्मीबाई अंग्रेजों जनरल ह्यूरोज से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।
- रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु पर जनरल ह्यूरोज ने कहा था, "भारतीय क्रांतिकारियों में यहाँ सोयी हुई औरत मर्द है।"
- तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचंद्र पांडुरंग था। वे ग्वालियर के पतन के बाद नेपाल चले गए जहाँ एक जमींदार मानसिंह के विश्वासघात के कारण पकडे गए और 18 अप्रैल 1859 को उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया।
- बिहार के जगरीपुर में वहाँ के जमींदार कुंवर सिंह 1857 के विद्रोह का झण्डा बुलंद किया।
- मौलवी अहमदुल्लाह ने फैजाबाद में 1857 के विद्रोह का नेतृत्व प्रदान किया।
- अंग्रेजो ने अहमदुल्ला की गतिविधियो से चिंतित होकर उसे पकड़ने के लिए 50 हजार रुपए का इनाम घोषित किया था।
- खान बहादुर खान ने रुहेलखंड में 1857 के विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया था, जिसे पकड़कर फांसी दे दी गई।
- राज कुमार सुरेंद्र शाही और उज्जवल शाही ने उड़ीसा के संबलपुर में विद्रोह का नेतृत्व किया।
- मनीराम दत्त ने असम में विद्रोह का नेतृत्व किया।
- बंगाल, पंजाब और दक्षिण भारत के अधिकांश हिस्सों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया।
- अंग्रेजो ने एक लंबे तथा भयानक युद्ध के बाद सितंबर, 1857 में दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया।

1857 की क्रांति के प्रमुख केंद्र व प्रमुख विद्रोही नेता:

विद्रोही नेता का नाम	विद्रोह की तिथि	केंद्र
बहादुर शाह जफ़र, बख्त खां	11 म, 1857	दिल्ली
नाना साहब, तांत्या टोपे	5 जून, 1857	कानपुर
बेगम हजरत महल, बिरजिस कादिर	4 जून, 1857	लखनऊ
रानी लक्ष्मीबाई	4 जून 1857	झाँसी
कुंवरसिंह, अमर सिंह	12 जून, 1857	जगदीशपुर
मौलवी अहमदुल्ला	जून, 1857	फैजाबाद
लियाकत अली	जून, 1857	इलाहबाद
खान बहादुर	जून, 1857	बरेली

1857 के विद्रोह के परिणाम:

- विद्रोह के बाद भारत मेँ कंपनी शासन का अंत कर दिया गया तथा भारत का शासन ब्रिटिश क्राउन के अधीन कर दिया गया।
- भारत के गवर्नर जनरल को अब वायसराय कहा जाने लगा।
- भारत सचिव के साथ 15 सदस्यीय भारतीय परिषद की स्थापना की गई।
- 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश सरकार द्वारा सेना के पुनर्गठन के लिए स्थापति पील आयोग की रिपोर्ट पर सेना मेँ भारतीय सैनिकों की तुलना में यूरोपियो का अनुपात बढ़ा दिया गया।
- भारतीय रजवाड़ों के प्रति विजय और विलय की नीति का परित्याग कर सरकार ने राजाओं को गोद लेने की अनुमति प्रदान की।

1857 के विद्रोह से सम्बंधित महत्वपूर्ण स्मरणीय तथ्य:

- बहादुर शाह दिल्ली मेँ प्रतीकात्मक नेता था। वास्तविक नेतृत्व सैनिकों की एक परिषद के हाथों मेँ था, जिसका प्रधान बख्त खां था।
- 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग था।
- यह विद्रोह सत्ता पर अधिकार के बाद लागू किए जाने वाले किसी सामाजिक विकल्प से रहित था।
- 1857 के विद्रोह मेँ पंजाब, राजपूताना, हैदराबाद और मद्रास के शासकों ने बिल्कुल हिस्सा नहीँ लिया।

- विद्रोह की असफलता के कई कारण थे, जिसमें प्रमुख कारण था एकता, संगठन और साधनों की कमी।
- बंगाल के जमींदारों ने विद्रोहियों को कुचलने के लिए अंग्रेजो की मदद की थी।
- बी. डी. सावरकर ने अपनी पुस्तक भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से इस धारणा को जन्म दिया कि, 1857 का विद्रोह एक सुनियोजित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था।
- वास्तव में 1857 का विद्रोह मात्र सैनिक विद्रोह नहीं था, बल्कि इसमें समाज का प्रत्येक वर्ग शामिल था। विद्रोह में लगभग डेढ़ लाख लोगों की जानें गई।